मधुबन/ज्ञान सरोवर/ शान्तिवन में - दादी जानकी जी की क्लासेज

1-10-16

''दिल में दिलाराम हो, दिमाग में कोई भी फालतू बात न हो तो बाबा की दृष्टि महासुखकारी है''

तीन बारी ओम् शान्ति कहते हैं तो पहले याद आता मैं कौन हूँ, आत्मा। फिर ऊपर अंगुली करो तो वो परमात्मा, सर्वशक्तिवान बाप है, वो मेरा है। सर्व शक्तियों में भी तीन शक्तियाँ फौरन मिलती हैं। एक सहन-शक्ति, दूसरी समाने की शक्ति, तीसरी समेटने की शक्ति। सर्वशक्तिवान बाबा के साथ बुद्धियोग होने से लाइट हो जाते हैं। बाबा ऐसा लाइट बना देता है, माइट देता है फिर सबको देखते हैं तो आत्मायें ही दिखाई देती हैं। बाबा ने हम सब बच्चों को इतना लाइट बना दिया है। कर्म बड़े बलवान हैं, परमात्मा सर्वशक्तिवान है। परमात्मा मेरा बाप सर्वशक्तिवान है। और बाबा कहता है, टेंशन नहीं, अटेन्शन रखो। टेन्शन होने से अच्छा नहीं है। क्या करूँ, कैसे करूँ.. यह नहीं। परमात्मा बाप ने कर्मों की ऐसी गुह्यगति समझाई है। कर्म के बिगर तो कोई रह नहीं सकता है, कर्म तो करना है, पर कौनसे कर्म करने है, उसका ज्ञान बाबा देता है।

डायमण्ड हॉल में बैठते यही ख्याल रहता कि हमारी जीवन डायमण्ड मिसल हो। कौड़ी मिसल नहीं, कौड़ियों के पीछे समय नहीं गंवाना है क्योंकि संगमयुग है, बाबा का यज्ञ है। अभी हम ऐसा क्या पुरुषार्थ करें जो सहज हो क्योंकि राजयोग सहजयोग है। राजयोग माना ही रीयल्टी, रॉयल्टी, रियलाइजेशन। योग लगाने की मेहनत नहीं है, मोहब्बत है इसलिए हर बात सहज हो जाती है। मन शान्त रहेगा तो बुद्धि श्रेष्ठ होगी फिर अच्छा सोचेंगे क्योंकि जैसा मन बुद्धि होगा ऐसे संस्कार बन जायेंगे। तो हर एक अपने को देखे कि हमारे संस्कार कैसे हैं! संस्कारों में कोई गड़बड़ न हो। संस्कार शुद्ध हों क्योंकि बाबा की पढ़ाई इतनी अच्छी है, हमको क्या बनना है और उसके लिये क्या करना है! सिर्फ दिल में दिलाराम हो, दिमाग में कोई भी फालतू बात न हो। फिर बाबा की दृष्टि इतना महासुखकारी है। मैं हमेशा कहती हूँ बाबा तू कितना अच्छा है, गोद बिठाके गले लगाया, गले लगाके पलकों में बिठाया, पलकों में बिठाकरके सारी विश्व में घुमाया। सारी विश्व में बाबा कैसा है, क्या करता है... मुझे 40 साल विश्व की सेवा करने के लिये भगवान ने भाग्य दिया। बाबा मेरा कैसा है, वो बताने के लिये 4-5 मिनट शान्ति में बैठो तो लगेगा कितना खुशनसीब हूँ, जो बाबा ने अपनी दृष्टि से सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द से भरपूर किया है। वन्डर है जो बाबा इतनी शक्ति देता है। हमारा बाबा बहुत मीठा है ना, मैं भी मीठी हूँ। बाबा हम सबको मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कह कहके मीठा बना रहा है। ज्यादा बोलने से कोई कोई हमारी भावना को कैच नहीं कर सकता है। हमारी भावना है सब राज़ी खुशी रहें, राज़ी हैं तो खुश हैं। बाबा ने सब ऐसा सहज कर दिया है, बाबा कहता है बच्चे कभी मेहनत नहीं करो। मोहब्बत है तो मेहनत नहीं है। ज्ञान के गुह्य राज़ों को समझने से खुशी होती है। बाबा है तो भाग्य है, दोनों मेरे साथी हैं।

आप सब मेरे बाबा के बच्चे हो, बाबा कहते हैं यहाँ चारों सब्जेक्ट्स में पूरे मार्क्स लेना है। नियम अनुसार टाइम पर क्लास में आना है और मर्यादा है कि कम बोलो, धीरे बोलो, मीठे बोल बोलो, जो कोई भी खुश हो जाये। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, लगाव, झुकाव, टकराव से बचके रहना है, इसे ही यहाँ त्यागना है, छोड़ना है। इसमें से कोई भी विकार है तो समझो यह नर्क का द्वार है। हमें तो बाबा ने इन पाँचों विकारों को जीतना सिखाया, इसके फल-स्वरूप अभी हम स्वर्ग में जाने के पहले ऊपर निर्वाणधाम, शान्तिधाम जायेंगे फिर सतयुग में आयेंगे। तो अभी सब परमधाम में जायेंगे फिर आयेंगे यहाँ स्वर्ग में नम्बरवार। एक बारी बाबा पहाड़ी पर बैठके सबको दृष्टि दे रहा था, फिर पूछा कि कहाँ बैठे थे? हम बाबा को देख रहे थे, क्या उत्तर देवें। फिर बाबा ने ही बोला ब्रह्माण्ड में बैठे थे। ब्रह्म तत्व में जहाँ अण्डे मिसल आत्मायें रहती हैं। तो बाबा ऐसा सिखाता है, बाबा ने ऐसे ऐसे शब्द उच्चारण किये हैं।

2-10-16

''संकल्प में दृढ़ता है तो माइंड में पीस है, मन यहाँ वहाँ बटा हुआ नहीं है तो सफलता है''

ओम् शान्ति की ट्रांसलेशन जरूरत नहीं है ना। एक ओम् शान्ति यहाँ यह, दूसरा ओम् शान्ति ऊपर वाला, तीसरा ओम् शान्ति यह सब कौन बैठे हैं! हम सब हारमनी हॉल में बैठे हैं, जब हारमनी कहते हैं तो मुझे याद आता है, हार मानी झगड़ा टूटा। हम सभी यहाँ बैठे हैं माइंड को पीसफुल बनाने के लिये, जब पीसफुल हैं तो लवफुल है। जब सोल-कॉन्सेस हैं तो लाइट हैं, लवफुल हैं फिर ऊपर वाला शक्ति देता है तो माइट आ जाती है।

आप सब कितने प्यारे, कितने मीठे परमात्मा के बच्चे हैं, है! परमात्मा सबका बाप है। सभी परमात्मा के बच्चे हैं, और ऐसे संगठन में दिल कहता है सभी शान्ति से ऐसे बैठे रहें तो कितना अच्छा लगता है। हर एक आत्मा एक दो से न्यारी है, न्यारी माना डिफरेंट। न्यारे रहना माना परमात्मा का प्यार पाना क्योंकि परमात्मा सर्वशक्तिवान है, उससे सबसे पहली रूहानी शक्ति मिलती है जिससे बुद्धि ऊपर चली जाती है। एक परमात्मा की याद बहुत न्यारा बना देती है।

काम महाशत्रु है परन्तु क्रोध थोड़ा भी गुस्सा नहीं हो। लोभ भी बड़ा विकार है, पैसा चाहिए, यह चाहिए...। फिर है मोह, यह व्यक्ति मेरा सम्बन्धी है। अहंकार का तो अंश न हो। तो रियलाइजेशन से इन सब विकारों को अन्दर ही अन्दर खत्म करना है। संकल्प में दृढ़ता है माना माइंड में पीस (पीस माना टुकड़ा टुकड़ा) नहीं हो अर्थात् मन यहाँ वहाँ बटा हुआ न हो और प्रभु के प्यारे हैं तो सफलता है। एक दो को देखते हैं तो कितने मीठे लगते हैं क्योंकि आवाज़ से परे रहना, दूर रहना अच्छा लगता है ना। समझदार वो जिनकी हार्ट बहुत अच्छी है, फिर हेड - जो बहुत सोचते नहीं हैं और यह जो ऑखें खुली हैं, जिससे एक दो को देख खुश हो रहे हैं।

मैं खास शान्तिवन से आप सब प्रभु के प्यारों का दर्शन करने आई हूँ। यहाँ आके आप सबको देखके मिलके बहुत खुश हो गयी हूँ। आप सभी भी खुश हो ना। यहाँ ऐसे लगता है सच्चाई और प्रेम की जैसे गंगा बह रही है। दुनियावी कोई आवाज़ नहीं इसलिए यहाँ एकांत में माना एक की गहराई में जाने से खुशी और शक्ति ऑटोमेटिक अनुभव होने लगती है। इस अनुभव के आधार से आपस में एक दो का केयर करना फिर शेयर और इन्सपायर करना...।

आज पूरे संसार में सबको शान्ति की जरुरत है। इसी शान्ति का सन्देश देने अर्थ मुझे ड्रामा अनुसार सारे विश्व का चक्कर लगाने का भाग्य मिला। भाग्य मिला माना क्या? भगवान मेरा साथी है, उसने जो ज्ञान दिया है, समझ दिया है वो साक्षी होकरके देखना मिलना। अच्छा।

4-10-16

''बाबा ने समय को सफल करने की समझ के साथ ट्रेनिंग भी दी है, यह शरीर निमित्त मात्र है, इसमें रहते जितना न्यारा उतना ही प्रभु का प्यारा बनना है''

ओम् शान्ति कहने से मैं कौन हूँ, इसकी ऑटोमेटिक स्मृति आती है और बाबा की याद खींचती है। एक ओम् शान्ति से मैं, दूसरी ओम् शान्ति से मेरा बाबा, जब मेरा बाबा कहती हूँ तो और कुछ मेरा है ही नहीं इसलिये फ्री हूँ। जब मैं मधुबन कहती हूँ तो उसमें ज्ञानसरोवर, शान्तिवन सब आ गये। मधुबन माना ही त्याग और तपस्या। त्याग करना नहीं पड़ता है, अपने आप त्याग वृत्ति हो जाती है। इतनी खुशी, इतनी शान्ति इतना प्रेम इतना अनुभव अच्छा होता है जो बाबा आप कितने अच्छे हो क्योंकि बाबा ने मुझे अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। मीठे बाबा से जो भासना मिली है वो कभी भूलती नहीं है। मैं चाहती हूँ कि यह आपका भी हक लगता है।

मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, यह स्मृति कितना खुश कर देती है। अभी हमारी यह जीवन यात्रा है। जो जीवन यात्रा पर होते हैं वो जितना आगे बढ़ते हैं उतना अच्छा लगता है। कहाँ जा रहे हैं? परमधाम, निर्वाणधाम, शान्तिधाम फिर आना है कहाँ? सुखधाम। यह सब अनुभव हो गया ना।

सारी दुनिया में बिचारों को यह पता नहीं है कि सुख क्या होता है? सुख को प्राप्त करने के लिये कितना समय गंवाया है और बाबा ने हमें समय को सफल करने के लिये समझ के साथ ट्रेनिंग दी है कि तू आत्मा मेरी हो, यह शरीर निमित्त मात्र है। बाबा का बन करके जितना न्यारा उतना ही प्रभु का प्यारा बनना है। तो इस लाइफ में जितना परमात्मा का प्यार मिला है और हम जो प्यार से पालना ले रहे हैं, इससे लगता है देवता तो पीछे बनेंगे उसके पहले फरिश्ता बने हैं। कहा जाता है पंछी और परदेशी दोनों नहीं किसी के मीत, इसलिये वो फ्री हैं तो सदैव उड़ते रहते हैं। कोई भी कर्म में, कहीं पर भी किसी के स्वभाव संस्कार में भी कुछ फीलिंग नहीं है। स्वयं से स्वयं भी खुश, आप भी खुश है ना। मैं तो खुश हूँ, बोलो तो नाचके दिखाऊं! खुशी में दिल नाच रहा है, क्योंकि खुशी में बहुत हल्के हो जाते हैं। कोई बोझ नहीं है। तो मेरा जी चाहता है कि यह थोड़े शब्द भी आप ऐसे मनन चिंतन करके जीवन में ले आओ। सहज है ना। एक बाबा है, एक होने से पॉवर आ जाती है। उस एक को साथी बनाने से बहुत सारी बातें इक्ट्ठी आपेही ठीक हो जाती हैं।

बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है... गीत का एक एक अक्षर दिल को लगता है, मैं नहीं समझती हूँ, किसी का मन कहीं और जगह जाता होगा, मुझे तो यह गीत बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि ऐसे अच्छे गीत बनाये हैं मैं वण्डर खा रही हूँ। तो ऐसी ऐसी यहाँ अच्छी-अच्छी बातें मिलती हैं जो दिल कहती है माना दिल में यह फीलिंग है, यह बहुत अच्छी खुशी में जैसे शक्ति आ रही है। अभी आप सब भी उसी एनर्जी को बाबा से ले रहे हैं, खींच रहे हैं। बाबा अच्छा है, परिवार भी अच्छा है जिससे सभी का चेहरा मुस्करा रहा है इस मुस्कराने में रूहानी राहत है। ड्रामाप्लैन अनुसार जो ऐसे बच्चे हैं, सतयुग में आने वाले राज्य पाने वाले बच्चे हैं वो जल्दी समझ जाते हैं। ऐसे नहीं कहते हैं मुझे अभी थोड़ा जल्दी समझ में नहीं आता है। नहीं।

आप सब भारतवासी हो, देवता धर्म की आत्मा हो। देखो, उसका बीज कितना अच्छा है इसलिये उसकी महिमा बहुत करते हैं क्योंकि जिस बीज़ से जो वृक्ष पैदा होता है फिर अन्त में वही बीज फिर से निकल आता है। तो पता चलता है इस झाड़ का यह बीज था, जिस बीज से झाड़ निकला है। इस झाड़ में देवता धर्म वाले बाबा की बातों को पहले-पहले जल्दी कैच कर लेते हैं। बाबा आप जो बताते हो वो बड़ा अच्छा लगता है। बाबा क्या बताता है, मीठे बच्चे हम बच्चे भी कहेंगे मीठा बाबा। कड़ुवा शब्द, रफ बोलना यह भूल है। ऐसी भूल कभी नहीं करना। अच्छा।

7-10-16

''संगठन में रूहानी स्नेह का वायुमण्डल बनाना और सदा खुशी में रहना, यह भी खुशनसीबी है''

तीन बारी ओम् शान्ति कहने से यह आवाज़, वायब्रेशन सारे विश्व में फैल जाता है। मैंने सेवार्थ पूरे विश्व में कई जगह चक्कर लगाया है परन्तु ऐसा ओम् शानति भवन कहीं नहीं है।

संगमयुग पर हमारे यह नयन, चाहे कान बहुत अच्छे हैं। कान सुनते हैं, नयन देखते हैं तो कितनी खुशी होती है, चेहरा चमक उठता है। इतने हमारे अपने बहन भाई हैं, मुझे यह पता नहीं था कि मुझे भी कोई दादी कहेगा। जैसे बाबा ने बचपन से लेकरके एक ही जनक नाम से बुलाया है, बाबा ने मेरा नाम चेंज नहीं किया। जैसा मेरा बाबा मीठा है, ऐसे मीठे बनके चलना है।

सारे कल्प में यह एक ही बारी है, जो हम आपस में मिलते हैं और दिल से बाबा कहते हैं। दिल कहे बाबा, बाबा कहे बच्चे। यह जो संगम पर खुशी और ताकत मिलती है, व्यक्तिगत हरेक के दिल से निकलता है बाबा। बाबा कहे बच्चे तो बहुत खुशी होती है। रूहानी स्नेह पहले पलकों से दिया फिर पलकों में बिठाके पहले गोद बिठाया फिर माला बनाने के लिये गले लगाया। संगठन में रूहानी स्नेह का वायुमण्डल खींचता है, अच्छा लगता है, जो शब्दों में नहीं कह सकते हैं परन्तु वायब्रेशन वायुमण्डल से पता चल जाता है। एक मिनट के लिये हरेक अपनी लाइफ को देखे मैं कितना खुशनसीब हूँ! खुशी पूछनी हो तो मेरे से पूछो। सदा खुश रहना बहुत बड़ी बात है। भगवान के घर में खाते हैं और सारा दिन आपस में शान्ति और खुशी बांटते हैं। मुझे सबको टोली देना भी बहुत अच्छा लगता है क्योंकि इसी बहाने ऐसे नज़दीक से दृष्टि द्वारा देखने, मिलने और मुस्कराने का मौका मिलता है। नॉलेजफुल बाबा ने हमें अपने समान मास्टर ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर, आनन्द का सागर... बना दिया है। इस बाप का यह भी वण्डर है कि यह माँ भी है तो बाप भी है, फिर शिक्षक भी है तो सतगुरू भी है तो सखा भी है, सब कुछ है। यहाँ तो एक ही समय पर एक बाप से ही सर्व सम्बन्ध और सर्व प्राप्तियाँ होती हैं। हम ऐसे बाबा को याद करें या याद में रहें जो जहाँ भी दुनिया के किसी भी कोने में हों, यहाँ के इस प्राप्ति के वायब्रेशन जायें तो बड़ा अन्दर अच्छा काम करते हैं। अच्छा।

8-10-16

''त्यागी तपस्वी बनकर सेवा का पार्ट बजाते अपना यादगार बनाना है, फरिश्ता बनना है''

साक्षी होकर देखते हैं तो बाबा ने आदि से ही साथ दिया है। फिर ज्ञान का इसेंस ऐसा सुनाया है, जो साक्षी होकरके देखने में बहुत अच्छी कमाई है। इससे बहुत अच्छा फायदा हुआ है। बाबा को है कि मेरे बच्चे ऐसा मेरे को याद करें जो सारे विकर्म विनाश हो जायें। तो मैं पूछती हूँ हरेक से कि आपके विकर्म विनाश हो गये हैं? जो समझते हैं बाबा की याद से हमारे सारे विकर्म विनाश हो गये हैं वो हाथ उठाओ। श्रेष्ठ कर्म करने का बहुत अच्छा भाग्य मिला है। बाबा और कोई गलत कार्य होने नहीं देता है। बाबा हमको तो बहुत प्यार करता है, सबको भी प्यार करता है। फरिश्ता बनाने के लिये बाबा कितनी मेहनत कर रहा है। संगम पर फरिश्ते के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। सारे चक्र में लौकिक बाप बहुत मिले होंगे परन्तु उन्हों ने कभी किसी को फरिश्ता नहीं बनाया, पर पारलौकिक बाप शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को निमित्त बनाकरके हमको फरिश्ता बनने की ऐसी अच्छी पढ़ाई पढ़ाई है जो अभी सभी को यही धुन लगी पड़ी है। हम मनुष्य से देवता बनेंगे क्या बड़ी बात है उसके पहले फरिश्ता बन रहे हैं। किसको अन्दर में फरिश्ता बनने का नशा और खुशी प्रैक्टिकल है? फरिश्ता बनने का अभी भाग्य है।

संगम पर कितना अच्छा त्यागी और तपस्वी मूर्त बनके सेवा करने का पार्ट मिला हुआ है। हरेक आत्मा ऐसा पार्ट बजाके अपना यादगार बना रही है। अभी यही समय है ''मेरा बाबा'' कहने का। बाबा भी सारे कल्प में मेरे बच्चे नहीं कहता है, इसलिये यह संगम की घड़ियां बड़ी अच्छी लग रही हैं। जी चाहता है बाबा तुम्हें देखता रहूँ... कैसे देख रहे हैं, बाबा को देखने में कमाई बहुत है। दिन रात स्वप्नों में भी बाबा दिखाई पड़ रहा है। इतनी अच्छी हरेक की सूरत मूरत फिर कभी देखने को मिलेगी, सारे कल्प में यह सुख नहीं मिलता है। सतयुग में भी नहीं देख सकेंगे। राधे कृष्ण ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं परन्तु अभी हम एक दो को क्यों देख रहे हैं? हमें एक दो को देखकर बड़ी खुशी हो रही है क्यों? क्योंकि हम सब गुण चोर बन गये हैं। सबके गुण दिखाई पड़ते हैं, अवगुण नहीं दिखाई पड़ते हैं, इसलिये बाबा बहुत अच्छा प्यार करता है। इस खुशी से गुण देखने में कमाई होती है। आप में जो गुण है ना वो मेरे में आ जायें। मेरे गुण आप भले ले लो। एक गीत है ना ले लो दुआयें माँ बाप की, गठरी उतरे पाप की...। तो ऐसे दुआयें लेते और देते चलो। अच्छा।

9-10-16

‘‘जिसका जड़ वा चैतन्य किसी में भी लगाव झुकाव नहीं है, वही फ्री हो संगमयुग का सुख पा रहे हैं’’

तन से यहाँ आपके सम्मुख हैं और मन से बाबा के साथ हैं, वन्डरफुल है। सारे कल्प में यही समय है जो तन और मन को बाबा की सेवा में लगाते हैं इसलिए मन कहीं और जाता ही नहीं। अभी बाबा ने मन को ऐसा अच्छा पाठ पढ़ाया है जो हरेक बच्चे के मन में बाबा है। हम अनेक हैं बाबा एक है। हम एक दो को देख करके बाबा शब्द ही बोलेंगे ना।

हम सब बड़े खुशनसीब हैं जो बाबा हमारे करीब है। बाबा को भी सारे कल्प के चक्र में इसी समय हम सबसे मिलने का, अपना बनाने का, साथ ले जाने का समय है। सारे चक्र में और कोई टाइम बाबा की यह ड्यूटी नहीं है। हम एक शरीर छोड़ दूसरा धारण करते हैं, वो तो यह भी नहीं करता है।

हम ब्रह्माबाबा को देखते हैं, कितने साल हुआ अव्यक्त हुए, जब साकार में बाबा शरीर में थे तो भी न्यारे बहुत थे। कमरे में बैठे या क्लास में बैठे, अभी वतन में बैठे हैं तो कितना न्यारे और प्यारे हैं। बाबा की पलकों में हम, हमारी पलकों में बाबा किसको यह फीलिंग है? मैं कहाँ रहती हूँ - बाबा की पलकों में। जो समझते हैं मैं बाबा की पलकों में रहता हूँ, वो हाथ उठाओ। सच! सभी ने हाथ उठा लिया। ऐसा कोई है जो कहे कि मैं तो पलकों में नहीं रहता हूँ? यह समय बड़ा वैल्युबूल है। बाबा पलकों में बिठाके राजाई दे रहा है और हम राजयोगी, सहजयोगी हर कार्य में सहयोगी।

जिस भी वाहन से जितना टाइम जिस देश वा जिस शहर से निकलते हैं, यहाँ पहुँचने तक कैसी अवस्था रहती है, बुद्धि में रहता है कि हम मधुबन जा रहे हैं, बाबा और आपस में मिलेंगे, यह भी बड़ा भाग्य है। मैं तो जिस भी भाई बहन को देखती हूँ, तो बड़े गुण दिखाई पड़ते हैं, सब अच्छे हैं। यहाँ से पाँव तक सर्व गुण सम्पन्न बन रहे हैं। सबके गुण अपने आप दिखाई पड़ रहे हैं, परन्तु इसके आगे 16 कला सम्पूर्ण भी बनना है। तो हरेक देखे क्योंकि इसमें बहुत कमाई है। सर्वशक्तिवान बाप हमारी सब कमजोरियों को खलास करके सर्व गुणों में सम्पन्न बना रहा है। तो सभी को यही लगन है ना! कितनी अच्छी लगन है यह, और हम सभी एक ही लगन वाले हैं। विश्व भर में जो भी बाबा के बच्चे हैं, जिन्होंने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र, झाड़ और सीढ़ी को समझा है उन्होंने प्रैक्टिकल अपनी ऐसी लाइफ बनाई है।

चक्र में संगम के समय में हमको क्या करना है, वो सब स्पष्ट और सहज है। कोई कन्फ्यूज़ नहीं है, क्या करूँ, कैसे करूँ... नहीं। करनहार, करावनहार बाबा बहुत अच्छा है, हमको ऐसे फ्री रखा है। संगमयुग के इस समय में हम जो सुख पा रहे हैं, जिसकी खुशी में हमारा जी चाहता है बाबा, बाबा फिर रेसपांड में बच्चे कहता है तो कितनी शक्ति आ जाती है, इस रूहानी शक्ति को बाबा से खींचने में त्याग भी है तो तपस्या भी है और सेवा भी है।

कोई भी जड़ या चैतन्य में लगाव वा झुकाव नहीं है, इतने हम फ्री हैं। हम एक दो को क्या देवें? मैं सबको ऐसे देखती हूँ और दिल से वाह रे बाबा वाह! कहती हूँ। जैसे बाबा मैं तुम्हें देखता रहूँ... और बाबा को भी अच्छा लगता है, संगम पर हमको देखते रहें... और बाबा क्या काम करेगा। सारे चक्र में यही टाइम है जो बाबा हमको अपनी पलकों में बिठा करके घुमा रहा है। तो कितना अच्छा है हमारा बाबा। क्योंकि अभी इस देश में वा देह में मजा ही नहीं आता है। इससे लगता है हम ही तो फरिश्ता बनेंगे, फिर सतयुग में देवता बनेंगे। ओम् शान्ति।

10-10-16

''शक्ति उसके पास आती है जो कर्मेन्द्रियों से कर्म करते कर्तापन के भान से फ्री है''

इस संगमयुग पर हम सब बाबा के बच्चों को जो खुशी है, सारे कल्प में फिर ऐसी खुशी नहीं होगी। जब मैं आप भाई बहनों को देखती हूँ तो क्या फीलिंग आती है? आप सब कितने अच्छे, कितने मीठे, कितने प्यारे हो क्योंकि जैसी वृत्ति, वैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि। हम सब भाई बहनों का माँ बाप शिक्षक वही है, सतगुरू भी वही है जो श्रीमत देता है। श्रीमत को अच्छी तरह से देखें तो मनमत बिचारी चलती नहीं है। परमत का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मीठे प्यारे बाबा ने हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी यह दो बातें पक्की करा दी हैं। तन भले यहाँ है, पर मन कहाँ है? हमको बाबा का फरमान है कि मनमनाभव, मामेकम् मुझ एक को सदा याद करो।

मेरे से कई पूछते हैं याद से शक्ति कैसे पैदा होती है? हम याद करते नहीं हैं, बाबा की याद रहती है क्योंकि बाबा की याद रहने से मन शान्त... और तन की कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करते भी कर्ता पन के भान से फ्री हैं तो शक्ति अपने आप आती है।

इस बार मैं पाण्डव भवन के हर कोने में गई, हर एक की डिपार्टमेंट अच्छी तरह देखी, ऐसे ही ज्ञानसरोवर में भी गई। वह रचयिता कितना वण्डरफुल है, जिसकी इतनी सुन्दर रचना को देख रचयिता बाप ऑटोमेटिक याद आता है। बाबा ने एडाप्ट किया है ना। तो नशा है कि पहले मैं किसका बच्चा था, अभी किसका बच्चा हूँ। सारे विश्व में ऐसे बच्चे हैं जिनकी दिल में सदा यही याद रहता कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। कितनी खुशी की बात है इसमें ताली बजाओ तो कोई हर्जा नहीं। बाबा एक ही है बच्चे अनेक पैदा हो गये हैं। शिव बाप ने ब्रह्मा बाबा द्वारा अपना बनाके मुझे अपना बनाकरके मुस्कराना सिखा दिया। इस गीत ने सारे विश्व में सेवा कराने के लिये शक्ति दी है। उसने अपना बनाया ना मैं कौन, मेरा कौन? बहुत खुशी की बात है। सारे कल्प में वा चक्र में यह नशा नहीं होगा, मैं कौन? मेरा कौन? तो सर्वशक्तिवान बाप मेरा है।

बाबा अव्यक्त होकरके भी अपनी सेवा कर रहा है, सिखा रहा है। इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करना ही है क्योंकि बाबा ने यज्ञ रचा है। मुख से ज्ञान सुनाया है और हमारे मुख में ब्रह्माभोजन खिलाया है। बाबा ने हम सबको सिम्पल रहने का सैम्पुल बनाया है। मुझे तो न लिखना आता है, न पढ़ना आता है, फ्री हूँ, सफेद कपड़ा खीसा (जेब) खाली, हम हैं विश्व के बाली।

सदा यही बुद्धि में रहता कि परमधाम घर में बाबा के साथ जाऊं, पहले नहीं जायेंगी। यह जो हमारे पूर्वज हैं ना, उन सभी ने त्याग, तपस्या, सेवा की है। त्याग के बिगर तपस्या नहीं होती है। तपस्या का वायब्रेशन बड़ा पॉवरफुल होता है। कहाँ पर बैठे भी यह वायब्रेशन जाये, जाता है अपने आप क्योंकि और कुछ बोलने आता ही नहीं है।

12-10-16

''सबसे भाग्यवान वह है जिस पर कोई बोझ नहीं, भारीपन नहीं, जिसे बेफिक्र रहने की बादशाही मिली है''

यह दुनिया पुरानी है, पराई है इससे हमारी कोई प्रीत नहीं है। बाबा ने हम बच्चों को अपनी नज़रों में रखा तो हमारी नज़रें बहुत अच्छी हैं। कोई भी कारण से अगर ऑखें गीली भी होती हैं तो ऑसू गिरते नहीं हैं क्योंकि गिरने वाले दु:ख के होते हैं और जो नहीं गिरते हैं वो खुशी के ऑसू होते हैं। क्या का प्रोग्राम याद नहीं, कल क्या होगा पता नहीं, पर अभी जो करना है वह कर लें, क्या कर लें? सर्वशक्तिवान बाबा से हर पल, हर सेकेण्ड में जो बल मिलता है, वह अपने पास जमा कर लें। जितना योग में रहते हैं तो कनेक्शन से लाइट और रिलेशन

से माइट आ जाती है। और आपस में जब मिलते हैं तो बड़ा प्यार पैदा होता है, उस प्यार को कैसे बांटें! बाबा कहते सारे चक्र में संगमयुग का जो यह थोड़ा सा समय है, ईश्वरीय परिवार में एक एक नूरे रत्न, बाबा के नूर में बैठने वाले हैं। हमारे नूर में कौन है? क्या है? कितनी अच्छी लाइट माइट है, एवरीथिंग राइट है।

मेरा बाबा है तो मेरे पास क्या है? भगवान। मुसलमान कहेंगे अल्लाह, क्रिश्चियन कहेंगे गॉड फादर। भारत में कहते हैं अहो प्रभु, तेरी लीला... अहो! भगवान हमारा भाग्य बनाने वाला परमेश्वर। बाबा की जितनी पहचान उतनी ख़ुशी, हमारी दिल कहती है, दिल दिलाराम के साथ है तो सुख शान्ति सेवा में हाज़िर है। हम फ्री हैं, सुख शान्ति सेवा कर रहे हैं। बाबा ने अपना बनाके बिन्दी लगाना सिखा दिया है। मैं आत्मा बिन्दी हूँ, परमात्मा भी बीजरूप है, उसकी हम रचना हैं। बड़ी ख़ुशी की बात है कि कोई बोझ नहीं है, भारीपन नहीं है। बेफिक्र रहने की बादशाही मिली है। भले सारे विश्व में सेवा कराने के लिये बाबा ने निमित्त बनाया परन्तु सेवा क्या है? हरेक आत्मा को मुझ आत्मा से क्या देखना है, क्या सुनना है, मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, बस। हरेक का पार्ट दो का एक जैसा नहीं है, वन्डरफुल है। बाबा ने बहुत अच्छा बिन्दी लगाना सिखाया है, बिन्दी तभी लगा सकते हैं जब पहले एक की याद है। कोई भी बात आई लगाओ बिन्दी, फिर दूसरी बार लगाओ बिन्दी तो पहले 10, फिर 100 फिर 1000 ऐसे बिन्दी लगाते जाओ। एक को बुद्धि में रख करके बिन्दी लगाई तो कौन क्या करेगा क्योंकि एक में इतनी शक्ति है।

सारे विश्व में जितने बाबा के स्थान है, उस स्थान पर रहने वाले, सेवा करने वाले को इस संग का रंग लग जाता है। हम सब एक के हैं, एक हैं। सारे चक्र में यह दृश्य फिर से देखने को नहीं मिलेगा। खाना और पहनना बाबा ने ऐसा सिखाया, खाना है तो क्या, पहनना है तो क्या? और कुछ नहीं। तन मन धन से तो समर्पण हो गये, अभी हमारे पास क्या है, श्वांस संकल्प समय के सिवाए और कुछ नहीं। मन इस तन में होते हुए मूँझा हुआ नहीं है, बड़े खुश हैं। बुद्धि में बेहद में नहीं क्योंकि बाप ही मेरा ऐसा है ना। बेहद का बाप है, वही टीचर है, वही सतगुरू है।

आप सब खुशराज़ी हैं,खुश हैं तो राज़ी हैं, राज़ी हैं तो खुश हैं। तो बाबा देख रहा है मेरे बच्चे खुशराज़ी हैं। कौन ज्यादा खुश है आप लोग या दादी? दोनों। दादी कहती हैं मैं तो बहुत खुश हूँ। जो जरा भी कभी नाराज़ होंगे तो वो माला में नहीं आयेंगे। कोई छोटी-मोटी बात में नाराज़ होने से 8 तो क्या 108 में भी नहीं आ सकेंगे। ऐसी उतराई चढ़ाई थका देती है, थकना भी एक बीमारी है। तो कभी कोई थकता तो नहीं है ना! मैं कहूँ मैं थक गई हूँ, मैं क्या करूँ, नहीं। संगमयुग बड़ा वैल्युबूल है, प्रभु मिलन की घड़ियां हैं इसलिये थको नहीं। दाल रोटी खाना, सफेद कपड़े पहनना। बेहद के बाबा ने बेहद में रहने की बादशाही दी है। अगर बेहद में बुद्धि नहीं है तो कोई न कोई हद के व्यक्ति वा वैभव से लगाव झुकाव में बुद्धि फंस जाती है।

13-10-16

''चित्त में सच्चाई है तो आनंद स्वरूप स्थिति है, फिर चिंता करने की बात ही नहीं है''

अभी कितनी खुशी की बात है कि हरेक के अन्दर से मैं कौन, मेरा कौन और हम सब आपस में कौन है! बाबा तो बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है, पर हम सब आपस में कौन हैं? एक बाबा के बच्चे हैं, हम सब एक हैं। बाबा कमाल है आपकी, बाबा हमको खिलाता है, सुनाता है, कितना हमारा ख्याल करता है और हमको क्या करना है? आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमानबरदार बनना है। लौकिक दुनिया में भी आज्ञाकारी बच्चा प्यारा लगता है सारे परिवार में, वो परिवार की शोभा बढ़ाता है। और हम यहाँ बाबा के ऐसे आज्ञाकारी बच्चे भी बड़े प्यारे लगते हैं, सबसे न्यारे लगते हैं। अभी समय बहुत थोड़ा है, घर जाना है, सतयुग में आना है। सभी को यही है ना अब घर जाना है, फिर सतयुग में आने के लिये ऐसे अभी विकर्माजीत सो

कर्मातीत बन जाना है। अभी का जो पुरुषार्थ है कि कर्मयोगी रह यज्ञ की सेवा भी करना है क्योंकि अन्त मते सो गते, जैसी हमारी अन्त मति, वही बाबा हमारा गति सद्गति दाता है।

बाबा कैसे हमारा साथी है और साक्षी होकर के जो ज्ञान का इसेन्स है, हर आत्मा का पार्ट अपना है। हम साक्षी होकर कहती हूँ, मेरे को तो आजकल जिस भी बहन भाई को देखती हूँ वह बहुत अच्छा लगता है। तो हम सबका बाबा तो बुद्धिवानों की बुद्धि है और बाबा हम बच्चों को पलकों में बिठा करके ले जा रहा है। सभी को यह फीलिंग है ना! बाबा हमको अपनी पलकों में बिठाये तो हम बाबा को कहाँ बिठायें - हमारे पलकों में भी बाबा। बाबा गोद बिठाके, गले लगाके पलकों में बिठाके घर ले जा रहा है। फिर सतयुग में आने के लिये खूब सेवायें करा रहा है। जितने भी सतयुग में आने वाले हैं उतने यहाँ अब तैयार हो जायेंगे। घर जाना है तो नष्टोमोहा होना पड़ेगा और सतयुग में आना है तो क्या करना होगा! एकदम मूर्ति। बाबा तेरा बनने में बहुत सुख मिला है। कौन है जो समझते हैं बाबा ने बहुत सुख दिया है। तो हम न कभी दु:ख देते हैं, न लेते हैं। कभी भी नहीं। मैं समझती हूँ, किसी को दु:ख नहीं दिया है। बाबा कहते न दु:ख देना, न दु:ख लेना तो क्या देना? सच्चाई से खुश रहना, खुश करना। तो हरेक अपने आपको देखे हम कितने सच्चे और कितने खुश हैं!

पहले-पहले ज्ञान है त्याग का, फिर है तपस्या। त्याग वृत्ति है तो तपस्वी मूर्त और सेवाधारी है। इज़ी है। बहुत मेहनत नहीं है। आदि से लेकर जो बाबा की मुरलियां चली हैं, जिसमें बाबा ने पालना दी है, उसमें मुख्य है सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप। नियत साफ तो मुराद हांसिल, जो संकल्प करो वो हो जाता है। सच्ची दिल है ना तो मेहनत नहीं है। बाबा जो कहते हैं, अभी जो बच्चे जहाँ सेवा के लिये निमित्त हैं वो निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी। सभी समझते हैं इसी स्थिति में सदा रहना है। सहज है ना। इज़ी है ना। पहले निराकारी स्थिति चाहिए, जैसे शिवबाबा ब्रह्माबाबा के तन में बैठ करके हमको पढ़ाता भी है, पालना भी दे रहा है। हम किसके बच्चे हैं, क्या हैं, वो नशा भी चढ़ा हुआ है। निश्चय बुद्धि विजयंती तो हमें किस चीज़ का निश्चय है? मैं कौन, मेरा कौन! मुझे तो और कुछ काम नहीं है, आप लोग बहुत सेवा करते हो, मैं क्या करूँ। सारी विश्व को शान्ति, प्रेम, खुशी, शक्ति के वायब्रेशन यहाँ से मिलें, यह भावना है।

प्रवृत्ति में रहते हुए कमल फूल समान रहना सहज है ना! सभी अच्छी तरह से अटेन्शन दे रहे हैं कि भले कितना भी पानी है, कुछ भी है पर छींटा न पड़े। सदा उपराम वृत्ति न्यारा तो कितना बाबा का प्यारा बनता है जितना न्यारा बनेंगे उतना बाबा का प्यारा। बाबा के प्यार की शक्ति जो है वो कैसे चलाती है, ऐसे कई आत्माओं को मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि बाबा के प्यार को प्राप्त कर न्यारे बनने से कितना प्यार पाया है, अभी तक ले रहे हैं। बाबा का प्यार अगर मेरे पास है तो जो भी मेरे संग रहेंगे, जहाँ मैं जायेंगी वहाँ उनको मैं क्या देंगी? जो बाबा ने प्यार दिया है वही तो देंगी ना। तो न्यारा माना अपनी देह, देह के सम्बन्धी, दुनिया सबसे न्यारा, मेरा न लगाव है, न झुकाव, न ही कोई टकराव, प्रवृत्ति में रहते हुए सभी खुश है। मेरे से सब खुश हैं, मैं भी सबसे खुश हूँ, मुझे और तो कुछ करना नहीं आता है परन्तु खुश रहना और खुशी देना, यह सबसे अच्छा सहज योग भी है। तो ज्ञान भी इसमें है, सेवा भी इसमें है।

हमारा आपस में प्यार है, तो जब प्यार कहते हैं तो दिल को हाथ लगाते हैं बाबा सारी सृष्टि को जैसे अंगुली पर चला रहा है। बाबा की कितनी कमाल है। हरेक हर कार्य करते हुए, अपने आपको देखो कि सदा न्यारे और प्यारे होकर रहते हैं ना। मैंने किया है, मुझे करना है, यह सिर पर बोझा नहीं है। न्यारा और प्यारा रहेंगे तो बाबा का प्यार अपने आप सेवाधारी बनाता है। वो करा रहा है, जो टचिंग आ रही है वो कर रहे हैं, यही तो सेवा है। सुबह से रात तक कितने प्रकार की सेवा है पर बाबा ने अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया है।

गीत है ना, भले मुख से नहीं गाओ परन्तु हरेक को यह संग का रंग लग जाये बाबा आपका बनने से सुख

मिलता इलाही है...। कई पत्रों के जवाब में भी मैं यही लिखवाती हूँ कि सदा यही गीत गाते रहो, बाबा आपका है तो कभी भी कोई चिंता न हो। कहते हैं ना चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी हो, चिंता करना हमारा काम नहीं है। सत् चित्त आनन्द स्वरूप। चित्त में सच्चाई है और कोई बात नहीं है तो आनन्द स्वरूप है इसलिये सन्यासी महात्माओं का जो नाम होता है। जैसे स्वामी गंगेश्वरानंद उसमें आनन्द आता है। यहाँ सच्चाई और प्रेम है तो सब आनन्द ही आनन्द है। न्यारा है, प्यारा है। लगाव नहीं है परन्तु आपस में सच्चा मिलनसार स्वभाव हो।

सुबह से रात तक घर बैठे, कार्य करते जब मैं कहूँ तो मेरी अंगुली यहाँ, मेरा कहूँ तो बुद्धियोग ऊपर चला जाये। बस, और कुछ जानती नहीं हूँ। मैं पढ़ी लिखी नहीं हूँ, पर मैं निमित्त हूँ, न मुझे अपना सेन्टर है, न अपना घर है, न कुछ अपना बैंक है, कुछ नहीं है। बैंक क्या होती है, मुझे पता नहीं है। सारे विश्व में सेवा की होगी, पर थैला लेके नहीं घूमती हूँ। न थैला, न थैली। बाबा ने पक्का कराया तुम जनक हो ना, तो ट्रस्टी और विदेही हो रहो। विदेही रहने की अन्दर में ऐसी प्रैक्टिस हो और कार्य-व्यवहार में होते ट्रस्टी। थैंक्यू, ओम् शान्ति।

14-10-16

''बाबा की शिक्षाओं को प्रैक्टिकल में लाना ही बाबा के गुण ग्रहण करना है, फालो फादर करो तो साक्षात बाप समान बन जायेंगे''

बाबा ने अपनी दृष्टि से क्या से क्या बना दिया है, दु:ख क्या होता है, पता नहीं है। सभा में ऐसा कोई है जो कहे मैं सुखी नहीं, दु:खी हूँ! सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम प्रैक्टिकल है? यहाँ हाथ लगाके देखो। सचमुच जिसके पास सुख, शान्ति है वो बाबा का लाडला बच्चा है। मैं लाडली हूँ। जहाँ बिठाये वहाँ बैठूँ...। माँ के रूप में है तो कितना प्यार करता है और बाप के रूप में बाबा को फॉलो फादर करना सिखाता है इसलिए मैं बाबा का शुक्रिया मानती हूँ क्योंकि बाबा ने फॉलो करने में बहुत अच्छी मदद की है। बाबा ने ऐसा अच्छा बनाया है जो कोई इच्छा नहीं है। इच्छा मात्रम् अविद्या। बाबा की जो शिक्षायें हैं वो अमल में लाना, प्रैक्टिकल लाइफ में लाना, यह है बाबा के गुण ग्रहण करना। बाबा के गुणों को ग्रहण (धारण) कर लेना माना बाबा की शिक्षाओं को अमल में लाना। तो दिल कहता है साक्षात् बाबा के समान बनें, यह भी एक शान है ना कि किसके बच्चे हैं! ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी यह कितना नशा है! हम न्यारे हैं, दुनिया में जितने भी लोग हैं हम उनसे न्यारे हैं और प्रभु के प्यारे हैं, यह नशा चढ़ा हुआ है। एक एक बाबा का बच्चा इस जीवन यात्रा का मजा ले रहा है। सतयुग में सब कुछ अच्छा होगा, पर अभी जो मजा है सुख, शान्ति, प्रेम, आनन्द में रहना। जिधर देखता हूँ तू ही तूँ... यह भक्ति के अक्षर हैं पर अभी हम ऐसे नहीं कहेंगे। मुझे तो अभी बाबा के बच्चे कितने प्यारे लगते हैं जिधर देखो उधर एक से एक अच्छे हैं। हर एक से कितने अच्छे वायब्रेशन आ रहे हैं। कोई कहाँ बैठे हैं, कोई कहाँ पर हरेक के अन्दर में यही है ना कि मैं कौन और मेरा कौन! जिसकी नज़र निहाल करने वाली है वो हमारे अन्दर है। निहाल शब्द का अर्थ सहित महत्व जीवन में देख बहुत खुशी होती है। तो आप सबको भी मैं दिल से कहती हूँ कि फॉलो फादर करो। जो बाबा को फॉलो करते हैं वो बहुत प्यारे लगते हैं। इसमें मेहनत करनी चाहिए हम बाबा के बच्चों को, ताकि बाबा का नाम बाला हो, यह भावना है, इसके लिये आरामपसंद नहीं बनो। करावनहार करा रहा है तो कर लो ना। भले हम निमित्त हैं, पर कराने वाले की कमाल है, सिर्फ हरेक के प्रति दया भाव रखो तो दुआयें भी बहुत मिलती रहेंगी। बाबा ने तो बड़ी दिल, खुली दिल बना दी है। अच्छा, ओम् शान्ति।

15-10-16

''बाबा ने अपना बनाके इतना सुख दिया है, जो अपने समान मास्टर दु:ख हर्ता सुख दाता बना दिया है''

बाबा जो हमें सिखाता है उसे कैच करना कितना बड़ा भाग्य है। मैं समझती हूँ मैं कौन, मेरा कौन को आप सभी अच्छी रीति समझ गये होंगे। मुझे तो ज्यादा बोलने नहीं आता है, मैं कौन, मेरा कौन का ही नशा चढ़ जाता है। आप सब भी मेरे एक बाबा के बच्चे हो। जो मेरा है और आप सब भी जो बैठे हो ना, सब अच्छे ते अच्छे हैं। सारे कल्प में यही टाइम मिलता है, उसको सब बच्चों को अपना बनाने का और बच्चे कहें आप हमारे हो, हम आपके हैं। मुझे यह बहुत खुशी है पर्सनल अपनी और आप सबकी भी, मैं समझती हूँ जितने भी सभा में बैठे हैं, सबको क्या फीलिंग है? मैं कौन, मेरा कौन..। मैं कौन हूँ... मेरा कौन है... कितना अच्छा लगता है संगमयुग है, बाबा हमारे साथ है और मुख्य बात है बाबा ने यज्ञ रचा है। यज्ञ ने हमारी पालना की है। बाबा ने कमाल का काम किया है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को अपना बनाकर के कितनी युक्ति रची, सारे विश्व से हम सभी को चुना। हरेक कहेंगे मेरा बाबा। अभी जैसे मैं ओम् शान्ति कहती हूँ वैसे दिल कहता है आप सब कहो ''मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा''।

मुक्तिधाम में जाने के लिये विकर्माजीत बनना है। सुखधाम में आने के लिये सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनना है इसके सिवाए मेरे को और कुछ आता ही नहीं है क्योंकि अभी बेहद के त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी भी बनना है। भले कोई कल पैदा हुए हैं, पर हम सब बाबा के आदि रत्न हैं। बाबा ने दृष्टि से अच्छी सृष्टि बना दी है परन्तु बाबा बहुत होशियार है, जो दृष्टि से सारी सृष्टि चेंज कर देता है। सारे कल्प के अन्दर इतने बच्चे कोई भी पीर पैगंबर नहीं पैदा कर सकता है। कोई ने नहीं किया लेकिन यह बड़ा होशियार है। आदि से अब तक सारी हिस्ट्री को इमर्ज करने से बाबा मुझे बहुत अच्छा लगता है। बच्चों को कैसे पैदा करता है, सभी कहते हैं मेरा बाबा। तो सभी को यह तात और लात लगी हुई है ना। सारे विश्व को छोड़ते नहीं हैं, संगमयुग की यह जो घड़ियां हैं ना बहुत अच्छी हैं इसलिये इस घड़ी में टाइम दिखाई नहीं पड़ता है। बाबा खुद क्या करता है और हम बच्चों से क्या कराता है, देख रहे हो ना। इतना बड़ा भण्डारा! क्या भण्डारा है, भोजन बनाने वाले, बर्तन धोने वाले सबकी क्या कमाल है! मुख्य बात है जो कपड़ा सिलाई करने वाला भाई है ना, वो भी बड़े प्यार से मिलने आता है। आप सभी सिलाई किया हुआ कपड़ा मिलता है ना। वन्डर है भले कोई प्रवृत्ति में भी है, बाल-बच्चे भी साथ में हैं परन्तु बेफिक्र हैं।

बाबा की कितनी सुन्दर रचना है। कोने-कोने से छिपे हुए बच्चों को ऐसे अपना बनाके कितना सुख दिया है। कौनसा सुख दिया है? सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम देखना है तो आपेही देखें। हर एक दु:ख हर्ता सुख दाता बन गये हैं। हम भी मास्टर दु:ख हर्ता हैं, सुख दाता हैं। सारे विश्व में यही तो काम किया है, यही बड़ी खुशी की बात है। एक बार की बात है किसी कन्ट्री में सोने के लिए खटिया नहीं थी, तो मुझे झूले में सुलाया। झूले में झूलते कितना मजा आ रहा था। ऐसे लगता था जैसे बाबा की गोद के झूले में सो रहे हैं। तो बाबा ने कैसे कैसे सेवा कराई है, हम तो ज्ञान हिंडोले झूलेंगी, सुख दु:ख सारा भूलेंगी... इतनी अच्छी-अच्छी बातें बाबा ने लाइफ में अनुभव कराई हैं। तो खुशी से झूले में झूलती रही। जो निमित्त बने थे वहाँ की सेवा कराने के लिये, वो अभी तक भी वह सीन याद करते हैं। प्यार क्या चीज़ है, सच्चाई क्या चीज़ है? सच्चाई और प्यार तो नेचुरल है, तो बाबा प्यार करेगा ना। हमको तो इसके सिवाए और कुछ आता नहीं है। बाबा ने यह सब खेल रचा है, जहाँ जाओ बाबा ही बाबा, बाबा ने क्या किया है! किसी न किसी को निमित्त बनाया है, कोई न कोई सेवा में, वो कहेंगे बाबा ने निमित्त बनाया है। निमित्त बनने में सच्चाई और प्रेम है और कुछ चाहिए! अपने आप उनसे जो सेवायें हुई हैं या

हो रही हैं, कमाल है मीठे बाबा की। आपके आगे और क्या बोलूँ, रचना जिसकी इतनी सुन्दर वो रचता कैसा होगा...। आपकी भी ऑखें देख रही है ना, रचता की रचना बड़ी सुन्दर है।

अभी बाकी कितना टाइम होगा? मैं अन्त तक होगी ना! तो सभी सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनने की डिग्री पास कर लो। जो भी जहाँ भी रहेंगे, जहाँ भी जायेंगे वहाँ सच्चाई और प्रेम से सबको सुख देने की सेवा के निमित्त बनेंगे। अच्छा, ओम् शान्ति।

17-10-16

''बाबा की आज्ञा सिरमाथे पर हो तो मनमत, परमत से फ्री रहेंगे, मनमत नहीं तो परमत का प्रभाव भी खत्म हो जायेगा''

तीन बारी ओम् शान्ति। मैं अंगुली से इशारा देती हूँ पहला ओम् शान्ति मैं कौन? एक सेकण्ड पहली ओम् शान्ति मैं कौन हूँ... मैं मैं शब्द जो है ना, बॉडी से नहीं बोल रही हूँ, मुख बोल रहा है पर बोलने वाली मैं कौन हूँ... दूसरा ओम् हमारा बाबा वो हमको लाइट बना देता है, माइट दे देता है। भले लाइट मिले, माइट न हो माइक न हो तो, लाइट आ गयी और माइक न आवे तो? वन्डरफुल बाबा, वन्डरफुल ड्रामा। तीसरा ओम् शान्ति इतने सब बाबा के बच्चों को देख कितनी कमाई है, सारी पढ़ाई में बहुत कमाई हुई है। किसी जॉब से ऐसी कमाई नहीं होगी। यहाँ सर्व गुणों से सम्पन्न बनने की पढ़ाई से बहुत कमाई होती है। तीनों ही ओम् शान्ति प्रैक्टिकल स्वरूप में, व्यवहार में, सम्बन्ध में बहुत अच्छा काम करती हैं। यह जीना, जीना है। अब जीते जी मरने का समय है माना जीते हुए भी मरे हुए हैं अर्थात् इस पुरानी दुनिया में हमारा मन बुद्धि नहीं है। मन कहता है तू कहाँ हो! जब मैं आप सबको यहाँ देखती हूँ ना तो सारी विश्व में जो बाबा के बच्चे हैं वो सब यहाँ जैसे हाज़िर हैं, ऐसा फील होता है। यह साधन अच्छे हैं। समय अनुसार यह साधन भी बहुत सेवा करते हैं।

न मैं किसी की माँ हूँ, न मैं किसी की सासू हूँ, न किसी की फ्रैण्ड हूँ, न मैं किसी की स्टूडेन्ट हूँ, तो फिर क्या हूँ? मैं कौन हूँ? दिल कहता है, अभी मुख से क्या बोलूं, दिल चाहता है कुछ बोलूँ पर क्या बोलूँ - मैं कौन, मेरा कौन का नशा चढ़ा हुआ है। जितना समय भी बाबा की याद में बैठे उतना समय क्या किया? क्या बस सिर्फ दृष्टि लेते रहे? वैसे भक्ति में कहते हैं जिधर देखता हूँ तू ही तू... वैसे अभी जिधर देखते हैं उधर बाबा के बच्चे ही दिखाई देते हैं। जिसकी पालना, पढ़ाई और प्राप्ति इतनी जबरदस्त है तब तो यहाँ फ्री बैठे हैं। कोई काम नहीं, न सिर्फ काम महाशत्रु, वो तो बिचारे सब छूट गये, क्रोध भी चला गया। पहले क्रोध बिगर तो कुछ कर नहीं सकते थे, अभी वो बिचारा हो गया है। तू मीठा बन। अभी अभी सच्चे दिल से हाथ उठाना कि कभी भी बाबा का बनने के बाद क्रोध किया है? जिन्हों को क्रोध आया हो वो हाथ उठाओ। सच, असुल नहीं, मुख पर भी नहीं, ऑखों में भी नहीं, इतना अच्छा चार्ट रखा है, तो अच्छा है।

मेरी शुरू से लेके सच्चाई और प्रेम से पुरुषार्थ और सेवा की गाड़ी अच्छी चली है। सच तो बिठो नच। आप सबकी भी जीवन यात्रा इसी तरह से चल रही होगी! क्योंकि बाकी कितना टाइम होगा, अभी का जो समय है, पूरे कल्प में बहुत-बहुत वैल्युबूल है। यह सारी दिलाराम की बातें दिल में हैं, वो सब दिल में समाने के लिये सुना रहे हैं। जो मुख से बोल रहे हैं, कानों से सुन रहे हैं वो प्रैक्टिकल लाइफ हो। सिर्फ सुनने सुनाने के लिये ज्ञान नहीं है, पर ज्ञान की हर प्वाइंट का अनुभव करके श्वांस, समय और संकल्प सफल करना है। तो हर एक चेक करें यह दृष्टि, बोल सेवा अर्थ सफल हो रहे हैं? और कुछ सोचने, बोलने की जरुरत नहीं है। मुझे तो जरुरत नहीं है, यह देखा है क्या बोलूँ? क्या देखूँ? बाबा क्या कर रहा है... बाबा को देखो, इसलिए बेडरूम में भी बाबा है, सीटिंग रूम में भी बाबा है। बाबा तेरा बनने में बहुत सुख मिला है, वो सुख वर्णन नहीं कर सकते हैं। उस सुख को कैसे दिखाऊं कि कितना सुख दिया है...। हम यह भी नहीं कहते कि हम सुख देते हैं, पर बाबा ने इतना

दिया है जो दाता बना दिया है। दिया उसने है परन्तु प्रैक्टिकल लाइफ में अपने जैसा बना दिया है। यह भी वन्डरफुल है कि बाप समान बनना है। कहाँ बाप, कहाँ बच्चा! परन्तु किसका शुक्रिया मानें इसका भी जवाब बाबा ने दे दिया है कि अनादि बना बनाया ड्रामा है, जो कल्प-कल्प रिपीट होता है, इतना धीरज रखो। सुख मिला है वो जीवन में हो।

हम सब कौन हैं, किसके हैं और क्या कर रहे हैं? यह तीन ओम् शान्ति है। तीनों ही इकट्ठे हैं, आज्ञाकारी है, वफादार है, इमानदार है। बाबा की आज्ञा सिरमाथे पर है यानी श्रीमत सिर माथे पर है। मनमत, परमत से फ्री हैं। मनमत नहीं है तो परमत का भी प्रभाव खत्म हो जाता है। अभी दिल से, बुद्धि से, नयनों से जो करेंगे वो हमारे संस्कार बन जायेंगे। सतयुग में हमारे संस्कार कैसे होंगे वो इमर्ज करो। सतयुग में क्या करेंगे? सतयुग जल्दी नहीं आवे क्योंकि यह बड़ा अच्छा समय है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग से बाबा ने छुड़ा दिया। मैं तो उसे जानती नहीं हूँ, वो कैसा है, क्या है उसमें, कुछ पता नहीं बाकी संगम अभी थोड़ा भले ठहरे। हम बाबा के साथ ऐसे जायेंगे। हमने बाबा का कभी माइक में बोला हुआ आवाज नहीं सुना है, इन कानों ने डायरेक्ट बाबा के महावाक्य सुने हैं, डायरेक्ट इन ऑखों से देखा है। लेकिन अभी जैसा समय वैसी बात। अभी यह सतयुग में तो नहीं होगा ना, और अन्त मते सो साइलेंस होवे, पर सच्चाई उड़ाके लेकर जा रही है। बाबा की हम बच्चों प्रति क्या भावना है? मेरे बच्चे हैं ना तो दुनिया की ऑख खुले कि यह भगवान के बच्चे हैं! कितने भाग्यशाली हैं! ओ.के., थैंक्यू। ओम् शान्ति।

18-10-16

''इस तन में जो मन है वह बहुत अच्छा हो, सदा अच्छी क्वालिटी वाले संकल्प हों, आज्ञाकारी, वफादार इमानदार और फरमानवरदार हो''

बाबा ने हम बच्चों को जो बताया है, उसे अभी जीवन में लाना है। कोई मिस नहीं करेंगे, क्योंकि मन शान्त है तो तन भी शान्त हो जाता है। जब से बाबा के बने हैं, बाबा की आज्ञाओं को पालन करने के लिये मन ने अच्छा साथ दिया है। एक बाबा के अलावा मुझे तो कोई याद नहीं आता है। तन से यहाँ बैठे हैं या कहीं भी हैं, पर मेरा मन बाबा के साथ है। ऐसे नहीं शान्तिवन से बाहर निकलें तो कुछ और करें, ना ना। मनजीते जगतजीते, यह बाबा के पुराने शब्द हैं। जैसे गीत में सुना कि परमधाम में जाना है, फिर वैकुण्ठ में आना है। वहाँ तो सब बना बनाया मिलेगा, हमको कोई बनाना नहीं पड़ता है। बने बनाये पर हम आयेंगे राजाई करेंगे खुशी से। राज्य करने की खुशी अभी है, यह राजाई तख्त है, क्या समझा है कितना नशा है! बाबा ऐसे ऐसे कर रहा है, बच्ची तू मेरी बच्ची हो ना, संग का रंग लगता है। कई बहन भाइयों को संग का रंग लगा है। ऐसी पवित्र ब्राह्मण लाइफ कितने भाग्य से मिली है। हम ब्राह्मण हैं, फॉलो फादर करने वाले हैं।

बाबा, बाबा तो है पर टीचर के रूप में देखता है इनका पढ़ाई पर कितना ध्यान है, थोड़ा भी रिवाइज़ करते हैं तो रिहर्सल होती है, रियलाइजेशन होती है। यह पढ़ाई इतनी अच्छी है सिर्फ ड्रामा में बाबा ने हमको इस अन्तिम जन्म में क्या से क्या बना दिया है। बाबा तो बहुत अच्छा है, कल्प के बाद फिर मिलेगा। बाबा सतयुग में कहाँ होगा, परमधाम में बैठा रहेगा। अभी साकार बाबा के द्वारा हमको पढ़ाया है, इस बाबा ने अपनी तो बहुत अच्छी कमाई की, हमको भी लायक बनाया। अभी मुझे वो बात याद आती है, पुराने जमाने में बाप जब नाराज़ होता था तो कहता था नालायक कहीं का। अभी किसी के मुख में ऐसे शब्द नहीं हैं क्योंकि शायद ना लायक नहीं हैं, परन्तु बाबा ने लायक बनाया है। तो सारे दिन में जिन भी आत्माओं से मिलन होता है, बहुत अच्छा है। मुझे खुशी होती है थोड़ा यज्ञ सेवा भी करते हैं। याद भी ले जाते हैं। एक बाबा साथ है तो संकल्प सदा क्वालिटी

वाला हो। इस तन में जो मन है, अच्छा है, आज्ञाकारी, बाबा का वफादार, इमानदार, फरमानबरदार है। मुझे तो लगता है कि हमारे जैसा भाग्यशाली सब बन जायें। (सभी ने ताली बजाई) ताली सच्ची दिल से बजाते हो ना, मुझे खुश करने के लिये तो नहीं बजाते हो! मैं तो कहती हूँ अपने ऊपर आपेही रहम करो, रहमदिल और फ्राखदिल बनो। जिसके अन्दर जो संकल्प हो वो आशा पूरी हो जाये ताकि इच्छा मात्रम् अविद्या हो जाये। लाइफ में अभी अभी जो संकल्प आवे वो सेवा अर्थ है तो आपेही पूरा हो जाता है, मांगना नहीं पड़ता है। मांगने से मरना भला इसलिए मांगना अच्छा नहीं है, रॉयल्टी नहीं है। इंसान तो क्या, हैवान भी प्यार से खुश हो जाता है। खुली दिल है, एक दो में विश्वास है। मैं बाबा को कहती हूँ, आपके इतने बच्चे अच्छे पैदा हो गये हैं उसका सुख बहुत मिला है।

हम भाग्यशाली तो क्या पदमापदम भाग्यशाली हैं जो बाबा के साथ बचपन से लेके आज दिन तक आत्मा इस शरीर में बैठे बड़ा सुख पाया है। शान्ति, सुख, प्रेम, आनंद सभी यह अनुभव कर रहे हैं ना! मैं कौन मेरा कौन, बस अन्त मते सो गते यही होगी, गैरंटी है। मुझे अपने लिए तो गैरंटी है, मेरी अन्त मते सो गति अच्छी होगी। मैं समझती हूँ जो भी भाई बहनें शुरू से लेके जानते हैं वो भी महसूस करते हैं तो हम क्या करती हैं! हमें चारों सब्जेक्ट्स में मार्क्स अच्छी मिलें, यह लक्ष्य रखने से फायदा बहुत हुआ है। ज्ञान क्या है? बाबा मेरा साथी है, मुझे साक्षी होकरके देखना है, पार्ट प्ले करना है। हमें तो थोड़े समय में फायदा बहुत लेना है। अच्छा।

22-10-16

(ग्लोबल हॉस्पिटल की सिल्वर जुबली में दादी जानकी जी का अनुभव)

मेरे को डॉ.जानकी दादी के नाम से लिखा हुआ कागज मिला, मैं डॉक्टर थोड़ेही हूँ। मेरे बाबा ने मुझे कुंज भवन में नटखट बच्चों को सम्भालने की सेवा के निमित्त बनाया था। बाबा मम्मा का अलग-अलग भवन था। तो बाबा रोज़ मुझे फोन द्वारा कुंज भवन में सब बच्चों का हालचाल पूछते रहते थे, तो कभी खुद भी देखके सभी को मिल करके जाते थे। कभी कोई बच्चे का हाल सुनके देखके समाचार जान करके बाबा उस बच्चे की बीमारी को दूर करने के लिये दवाई भी बताते थे। तो यह भी पेशेन्ट की सेवा करने से मेरा भाग्य बढ़ता गया, इसी बहाने बाबा से फोन पर रोज़ डायरेक्ट बात हो जाती थी, इससे भी लगता था मेरा यह भाग्य है। कराची में एक बार भी बाहर के किसी डॉक्टर को नहीं बुलाया क्योंकि बाबा टच करता था, सभी को क्या खिलाऊं, क्या पहनाऊं! बाबा ने ऐसी सेवा करना सिखाया और हमको इशारा करता था तुम्हारा काम है ध्यान रखना क्योंकि यह भी यज्ञ सेवा है, बाबा के बच्चे हैं। फल-स्वरूप बाबा के सभी बच्चे सदा हेल्दी, वेल्दी, हैपी रहे। हेल्दी माना माया की व्याधि से मुक्त, वेल्दी माना पैसे में नहीं, इस जीवन में अविनाशी ज्ञान धन ऐसा मिला है जो सदा है, हैपी रहने के लिये दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल रहता है। यह हमारे डॉक्टर या पेशेंट की रिक्वायरमेंट होती है, यही सबके लिये दवा भी है तो दुआ भी है। इसी से सबके चेहरे चमकेंगे क्योंकि पेशेंट सदा पेशेंस में रहे। धीरज, शान्ति, प्रेम - यह तीनों बातें हर एक के पास हों तो बहुत दुआयें मिलती हैं।

24-10-16

''अनासक्त और नष्टोमोहा वृत्ति, यह दोनों बातें धारण करने से सदा के लिये मुस्कराना सीख जायेंगे''

सारे विश्व में भले बाबा के अनेक स्थान हैं, परन्तु यहाँ का जो वायब्रेशन्स है, हर एक का अनुभव है। मैं समझती हूँ यह भूलेगा नहीं। कोई कोई यहाँ आके बाबा की ऐसी सुन्दर रचना को देख बहुत खुश होके मुस्कराने लग जाते हैं। तो मुस्कराने से कोई भी बात मुश्किल नहीं है। ऐसा मेरा बाबा है, बाबा ने ऐसी पालना दी है, पढ़ाया है जो कभी भी यह नहीं कहा होगा कि यह बात मुश्किल है। कुछ मुश्किल नहीं है क्योंकि सहज

राजयोग है, राजयोग से राजाई शानदार बहुत है, सिर्फ देखने वाली ही नहीं है पर जानने, पहचानने और अनुभव करने के लिये है। राजयोग का फायदा बहुत मिला है। बाबा का बनने से जो अभी भी राजाई मिली है। अगले जन्म के सतयुग में राजाई होगी पर यह जो राजाई है, मन कर्मेन्द्रियों के राजा, यह उससे भी श्रेष्ठ है।

बाबा ने ऐसे ऐसे शब्द उच्चारण किये हैं - मामेकम् माना मैं एक ही हूँ, तो हमारे लिये इज़ी हो गया है। एक ही बाबा है। बाबा की सूरत ऐसे खींचती है जो व्यर्थ तो क्या पर साधारण संकल्प भी नहीं आता है, नॉट एलाउ। सतयुगी राजाई में इतना मजा होगा! जो अभी राजयोग में आनंद-स्वरूप हो गये हैं। सत् चित्त आनन्द स्वरूप। सच्चाई है तो चित्त साफ है, वो जो आनंद है खुशी है। आनंद में खुशी है, शक्ति है। राजयोग की राजाई वन्डरफुल है। अभिमान नहीं है पर मेरे जैसा कोई नहीं, थोड़ा नशा एक्स्ट्रा है... माफ करना। दिल कहता है सब एक के हैं, एक हैं, यही स्मृति वृत्ति दृष्टि कितनी ऊंची है! मेरी बात डिफीकल्ट तो नहीं है ना। अनासक्त और नष्टोमोहा वृत्ति यह दोनों बातें धारण कराके बाबा अपना बनाके सदा के लिये मुस्कराना सिखा दिया। राजयोग की गहराई में जाओ तो ऐसी प्राप्ति है, अभी का मैं मेरा बहुत अच्छा है क्योंकि मैं कहूँ तो लाइट हो जाती हूँ, मेरा कहूँ तो माइट (शक्ति) आ जाती है।

यहाँ जो हमारी यूनिटी है, बहुत अच्छी है! यूनिटी में बहुत फायदा है। हर समय बाबा की अच्छी अच्छी बातें याद आ जाती हैं। बाबा ने इतना बड़ा यज्ञ रचा और हम सबको बेफिक्र बादशाह बना दिया। जैसे बाबा की दृष्टि महासुखकारी है, ऐसे हमारी भी दृष्टि सुखकारी हो। किसी से भी मिलो तो वह यह अनुभव करें। भले भाषा न भी आती हो। यह हमारा अलौकिक जन्म है। अभी हम तीन बाप के बच्चे हैं। सतयुग में भी ऐसा जन्म नहीं होगा। अच्छा।

28-10-16

''मेरे दिल की भावना है कि कभी कोई को भी व्यर्थ ख्यालात न आवें, आपस में हमारा सुखदाई सम्बन्ध हो''

मैं सारा दिन यह चेक करती हूँ कि मैं कौन हूँ? आत्मा हूँ ना। जहाँ हमारा तन होगा, वहाँ हमारा मन होगा। मेरा मन कहीं भटकता नहीं है, अच्छा है मेरा मन। बाबा का फरमान है मन को मेरे में लगा दो। बाबा देखता है बच्ची का मन मेरे तरफ है, तो किसको यह फीलिंग है कि मेरा बाबा, बाबा कहते मेरे बच्चे। संगमयुग की महिमा बहुत बड़ी है। कलियुग में हम कौन हैं, मेरा कौन है, यह कुछ पता ही नहीं है। सतयुग में अच्छे होंगे, सतयुग के संस्कार यहाँ भर रहे हैं। कुछ बोलने का जी नहीं चाहता है, कहाँ बैठे हैं हम, धरती पर भी पांव नहीं है, आसमान में भी नहीं है तो फिर कहाँ हैं हम! बाबा ने कहा है सूक्ष्मवतन में भी आवाज नहीं है। मूलवतन तो है ही शान्तिधाम, निर्वाणधाम। पर जब यहाँ बात करते हैं तो अच्छा लगता है। क्या बात करते हैं? मुझे हर समय मीठे बाबा के बोल याद रहते हैं, तभी दिल में यह गीत बजता रहता है - मुझे अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। मुझे यह गीत बहुत दिल को लगा हुआ है। बाबा दृष्टि दे रहा है, यह जो बाबा के बोल हैं, बाबा का बनकरके सारी लाइफ में एडजेस्ट होके चले हैं। कभी यह नहीं कहा है कि यह बात मुश्किल है क्योंकि कुछ मुश्किल नहीं है। तो मुस्कराओ। सारी विश्व में सेवा करने का जो बाबा ने हमको भाग्य दिया, सफेद कपड़ा खीसा खाली और सारे विश्व की सेवा हुई। सब मेरे बहन भाई हैं, सेवा के लिये हैं, बाकी कोई अटैचमेंट नहीं है। क्योंकि सदैव यह स्मृति रहती है कि हम कौन हैं, किसके हैं? इसकी खुशी और नशा है, अन्दर शान्त रहने की शक्ति है। जितना शान्ति में रहने की आदत हो उतना अच्छा। कोई भी न चिंता है न चिंतन है। यह हमारा भाषण वा क्लास नहीं है पर मिलन है। नाम भी लेने की जरुरत नहीं है। कोई भी काम नहीं है, पर प्यार से मिलन, दृष्टि

से मिलन। हर एक अपनी दृष्टि को देखे।

दिलवाला माना हमारी दिल लेने वाला बाबा, वह यादगार बना हुआ है। सदा ही दिल सच्ची है तो साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप है, यह किसको अनुभव है? सच्चाई और प्रेम के सारे विश्व में वायब्रेशन देना और लेना नेचुरल हो गया है। अभी दिल की बात यह है कि कभी भी व्यर्थ ख्यालात नहीं आते हैं, मेरे को तो नहीं आते, पर किसको भी न आयें यह भावना है क्योंकि सारे ही मेरे बहन भाई है ना। कोई कोई बहुत अच्छे अच्छे भाई बहनें आते हैं, उन्हें जब मिलते हैं तो बहुत खुशी होती है। संगमयुग में जो हमारा आपस में सम्बन्ध है ना बड़ा सच्चा सुखदाई है। दिल से पूछके देखो यहाँ हाथ लगाके देखो। मैं सोई रहती हूँ तो भी देख रही हूँ, संगमयुग पर इतने अच्छे यह ईश्वरीय सम्बन्ध सारे कल्प में अभी होते हैं। 5 हजार साल में यह जो समय है, बड़ा सुखकारी है। यज्ञ सेवा के लिये कइयों का बहुत प्यार है क्योंकि भगवान ने यज्ञ रचा है, जहाँ हम समर्पण हुए हैं। कई आत्माओं ने यज्ञ सेवा से अपनी बहुत अच्छी स्थिति बनाई है। कोई कोई पुराने मिलते हैं तो मुझे याद आता है इन्होंने दिल से सेवा की है इसलिए बाबा ने ही सबसे पहले दिलखुश मिठाई खिलाने की सिस्टम बनाई थी। तो दिलखुश मिठाई खिलाओ जो चेहरा खिल जावे। इस तरह की टोली खिलाने से भी बहुत खुशी होती है। सिर्फ हाथ से टोली नहीं देते पर स्नेह और सच्चाई की दृष्टि से और प्यार भरी बाबा की याद बहुत अच्छी आती है। खाओ टोली, सुनो बोली, बनो होली। इस प्रकार से संगम का हमारा यह मिलन बहुत ही मूल्यवान है। अच्छा -ओम् शान्ति।

29-10-16

''संगम का यह समय बहुत-बहुत बैल्युवुल है इसलिए समय, संकल्प और श्वांस सब सफल हो, ड्रामा में हर एक का अपना पार्ट है मुझे कभी किसी से नाराज़ नहीं होना है''

बाबा के साथ हमने जो अपनी लाइफ में सुख शान्ति पाया है, आप सब विचार करो कौन-सा सुख पाया है, जो सुख सारे कल्प में नहीं मिल सकता है। और सब धर्म वाले तो परमात्मा के लिये ऐसे अंगुली उठायेंगे। वो एक है, यह वन्डरफुल है जो हमारी बुद्धि में है मेरा बाबा कैसा है! वो अंगुली उठाते हैं पर जानते नहीं है वो कौन है, कैसा है। हम सब भाई बहन बड़े भाग्यशाली हैं जो जानते हैं वो कौन है, कैसा है, वन्डरफुल है। हरेक को व्यक्तिगत यह भासना है कि मैं कौन हूँ, मेरा कौन है। यह आप सब दिल से अनुभव से कहो मेरा बाबा तो मुझे खुशी है - मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा। जो आगे भी हमारे थे, अब भी हमारे साथ हैं। जब से बाबा के बने हैं बाबा साथ है। हम अकेले नहीं हैं, भले सब कहें हम सब एक हैं, एक के हैं। सभी भाई बहन एक के हैं। हमारा आपस में यह जो भाई बहन का रिश्ता है, बड़ा अच्छा लगता है, बड़े प्यारे लगते हैं। वायुमण्डल कितना सच्चाई और प्रेम वाला है। जैसे आप लोगों को अनुभव होता है उड़ रहे हैं, धरती पर पाँव ही नहीं हैं। उड़ने में मज़ा आता है।

पहले इतना पता नहीं था कि भगवान इतना भोला होता है, सचमुच वो कितना भोला है इसलिये हर एक कहता है मुझे बाबा चला रहा है, हम खुशी से चल रहे हैं। संगम का यह समय बहुत वैल्युबूल है। हमारी बुद्धि में सिवाए ईश्वर के और कोई नज़र नहीं आता है। हम सब एक के हैं, एक हैं। सारे कल्प में ऐसी सीन फिर नहीं आती है। भले सेवा अर्थ जीने का चांस दिया, पर बाबा साथ में न होता तो हम आज जिंदा नहीं हो सकती। समय की वैल्यू और साथ की वैल्यू रखने से हरेक का चेहरा खुश है। ड्रामा अनुसार यहाँ हमारा साथी इस साइड में स्वयं भगवान है और इस साइड में बाबा ने यज्ञ में हम बच्चों को समर्पण किया है, जीवन सफल हुई है। अपने आपसे पूछते हैं और हम चेक करते हैं तो सारे दिन में समय, संकल्प और जो श्वांस चलता है वो सफल हो रहा है। जो हुआ सो ड्रामा इसलिये कुछ भी होता है तो कभी किसी से नाराज़ नहीं होना। यहाँ बाबा, यहाँ ड्रामा, जो

बना था सो हुआ। पास्ट इज़ पास्ट। बीती को चितवो नहीं, आगे की न रखो आश। बीती बात चिंतन में नहीं है क्योंकि हो गया, आगे के लिये चुप रहना, निश्चय बुद्धि विजयंती। ड्रामा में हरेक का पार्ट न्यारा है। एक जैसा नहीं है परन्तु बाबा का बनने से बहुत प्यारे लगते हैं। पार्ट न्यारा है पर बाबा का प्यारा है। सारी लाइफ बाबा मेरे साथ रहा है, मैं बाबा के साथ रही हूँ। बाबा को कहती हूँ बाबा आपने अभी तक इस आत्मा को शरीर में क्यों रखा है? तो बाबा मुख से जवाब नहीं देता है, पर दृष्टि देता है। बाबा ने आप समान बनाने के लिये अपने पास रखा है। मेरे अन्दर भी सभी के प्रति यही भावना है कि सब बाबा समान बनें। इसके लिए हरेक अपना पुरुषार्थ करेगा, पर भावना भी काम करती है। एक दो को देखके भी खुशी होती है। थैंक्यू, ओम शान्ति।

30-10-16

''बाबा की दृष्टि महासुखकारी है, बाबा का प्यार, बाबा की दृष्टि, पालना और पढ़ाई से दुःख का नाम निशान गुम हो गया है''

मेरे को जब इमेल आते हैं तो उसमें पहले-पहले ओम् शान्ति जरुर लिखते हैं, इसलिये मैं कौन, मेरा कौन यह सबको पक्का हो गया है। प्रभु जो रचता है वह हमारा बाबा है, हम हैं उसकी रचना, बाबा अच्छा लगता है। वो कैसा है, हम मुख से उसकी महिमा नहीं कर सकते हैं। उनसे इतनी अच्छी प्राप्ति हुई है जो वह बहुत अच्छा लगता है। हम भाग्यवान हैं, इतना प्यार करेगा कौन! बाबा का प्यार, बाबा की दृष्टि, बाबा की पालना और पढ़ाई ऐसा फिर कहाँ मिलेगा! ऐसे बाबा को फॉलो करने से सुख मिलता इलाही है। दुःख का नाम-निशान गुम। अभी भी ऐसा कोई है क्या जिसको कभी दुःख होता हो! सभी समझते हो कि बाबा ने हमको बहुत सुख दिया है? बाबा की याद में बैठते हैं तो बाबा दृष्टि दे रहा है, बाबा की दृष्टि महासुखकारी है। ऐसे बाबा को हमने अपना बनाके बहुत सुख पाया है। बाबा ने रचता और रचना का ज्ञान बहुत अच्छा दिया है। बाबा कैसे रचता है, बाबा की यह सब रचना कितनी अच्छी है, एक दो मिनट बाबा को अच्छी तरह से देखो। बाबा इतना मीठा क्यों लगता है? पतित पावन बाबा ने पवित्र बनो योगी बनो का पाठ बहुत अच्छा पढ़ाया है। संगम की ऑखों देखी कहानियाँ बहुत अच्छी हैं, जब वो दृश्य सामने आते हैं तो बाबा कैसे प्यार से दृष्टि देता था। तो मुझे यहाँ बैठे वो सीन इमर्ज हो जाती है। अभी जैसे ब्रह्मा बाबा द्वारा शिवबाबा ज्ञान दे रहे हैं, ऐसे नहीं समझते थे, उन दिनों तो बाबा ही भगवान दिखाई पड़ता था। इतना अच्छा लगता था बाबा, जो तुम्हें देखता ही रहूँ...।

31-10-16

''हम सबकी सिम्पल लाइफ स्टाइल को देख करके जैसे कलम लग गया है, फूलों का बगीचा बन गया है, जिसमें बहुत अच्छे खुशबूदार फूल हैं''

भक्ति में पतित-पावन बाप को याद किया, अभी पावन बन गये ना! जो समझते हैं हमें पावन बनाने वाले बाबा ने अपना बनाके क्या से क्या बना दिया है, वह हाथ तो उठाओ। वाह! बहुत अच्छा। आपने तो हमें बहुत अच्छा खुश कर दिया। बाबा ने तो अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया।

बाबा की ऐसी कितनी बातें सुनाऊं, बाबा ने हमें अपना बनाके हमारी जीवन सफल कर दी है। किसी ने क्वेश्चन पूछा कि बाबा ने आपको इतना प्यार कैसे किया? दृष्टि से। बाबा की दृष्टि से बहुत सुख दिया है। फिर कहा तुम कहती हो मुझे बाबा ने बहुत सुख दिया पर हमको कैसे देगा? मैंने कहा आप भी सिर्फ बाबा से ऐसी दृष्टि लेते रहो तो अभी अभी बाबा की दृष्टि से आपको वह सुख मिल जायेगा। जैसे बाबा ने नई सृष्टि बनाने में हम सबको अपना साथी बना दिया है। बाबा हमारे लिये नई दुनिया बना रहा है, यह अन्दर से पक्का है कि हम वाया शान्तिधाम फिर सुखधाम में आने वाले हैं इसलिये अभी कोई प्रकार का भी न दुःख होता है, न लेते हैं।

हरेक अपने दिल में विश्वास रखे, बाबा कहते सतयुग में आने वाले हैं, यह भी पक्का है ना या और कोई

चिंतन में टाइम गंवाते हैं? जो मैं कौन, मेरा कौन के ज्ञान का मनन चिंतन करते हैं, वही भाग्यवान हैं। मुझे तो बहुत खुशी है कि मैं कौन हूँ! अच्छे बहन भाई उन्हें कहेंगे जो चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेने का पुरुषार्थ करते रहते हैं। चारों सबजेक्ट भले नम्बरवार हैं, जैसे ज्ञान योग धारणा सेवा। पहले सेवा नहीं है, मैं कौन हूँ का ज्ञान जब दिल को लग गया, तो सेवा आपेही होती रहेगी। संगमयुग की यह जो घड़ियां हैं, समय है, सारे कल्प में फिर ऐसा नहीं होगा। हम यह रोना नहीं रो सकते हैं कि हमारा तन ठीक नहीं है, धन हमारे पास नहीं है, नहीं, सबकुछ है।

हम जब भी यहाँ संगठन में याद में बैठते हैं, तो वायब्रेशन बहुत अच्छे होते हैं इसलिए कभी इसे मिस नहीं करना चाहिए। अभी वैकुण्ठ दूर नहीं है, वैकुण्ठ में जाने की खींच हो रही है, पर अकेली नहीं जायेंगी, औरों को भी तैयार करके सब मिल करके जायेंगे।

प्रवृत्ति में रहते भी न्यारा रहना, अपनी स्थिति को अच्छा बनाके रखना - यह बड़े भाग्यवान का काम है। ऐसी भाग्यवान आत्मायें जहाँ कदम रखेंगी वहाँ पदमों की कमाई है। जहाँ हमारा कदम वहाँ पदमों की कमाई है। बाबा ऐसे बच्चों को देख कहेगा स्वयं को सही पहचाना है, समय को भी ठीक से पहचाना है। फिर एक दो को भी पहचाना होगा। लगता है कि हमको आप लोगों ने पहचाना! और आपको भी मैंने पहचाना, हर एक बहन भाई न्यारे हैं, पर बाबा के प्यारे हैं क्योंकि जिनके स्वप्नों में भी बाबा, संकल्पों में भी बाबा तो उनकी दिल गाती होगी कि बाबा तुम्हें देखता रहूँ...। तो बाबा को देखते-देखते हमारी दृष्टि अच्छी हो गई है। मैं अपने से पूछती हूँ मैं क्या सेवा करती हूँ? सिर्फ टेन्शन से फ्री रहने का अटेन्शन है, कोई बात का भी टेन्शन नहीं है क्योंकि कोई कमी नहीं है। जब से बाबा के बने हैं, बाबा के घर बैठे हैं, खाते-पीते हैं, मौज में हैं। बाबा ने ऐसी सिम्पल लाइफ स्टाइल बनाई है जो एक दो को देख करके जैसे कलम लग गया है, अच्छा बगीचा बन गया है। सभी को देख ऐसे लगता है फूलों का बगीचा है, जैसे कमल का फूल पानी में रहते न्यारा है, पर गुलाब का फूल वन्डरफुल होता है। सभी एक जैसे फूल नहीं होते हैं, थोड़ा साइज में या रंग में फर्क होता है पर खुशबू होती है। कोई भी गुलाब के फूल में अगर नीचे कांटा होगा तो ऐसे निकाल देंगे। दोषी नहीं है वो, तो बाबा ने यह बगीचा बनाया है, इस बगीचे के हम सभी फूल हैं।

बाबा ने हमको एडाप्ट किया है तो जो बच्चे एडाप्ट होते हैं उन्हें अन्दर खुशी रहती है, पहले मैं किसका बच्चा था, अभी मैं किसका बच्चा हूँ। अभी यह जो अलौकिक जन्म है ना, बाबा ने अपना बनाके, गोद बिठाके, गले लगाया है। फिर पलकों में बिठाकर साथ ले जायेगा। अभी हर पल बाबा की याद हो। समय है सफल करने के लिये। भले हमारे पास पैसा नहीं है, कुछ भी नहीं है, फिर भी बाबा की याद में समय तो सफल कर ही सकते हैं। यह तो हमारे हाथ में है ना। कई बाबा के बच्चे हैं जो पैदा पीछे हुए हैं परन्तु ऐसा पुरुषार्थ करते हैं जो माला का मणका बन जायें। मैं आप सबसे पूछती हूँ – कौन है जिसको 108 में आने की चितविना लगी हुई है? अगर 8 में नहीं आ सकते तो 108 की भी माला अच्छी है। बाबा के हाथों में अगर यह माला आ गयी तो मैं उस माला में आ गयी, तो वाह मेरा बाबा, वाह मेरा भाग्य। बाबा ने मुझे जनक नाम से ही प्यार से पाला है, इससे ट्रस्टी और विदेही रहने की नेचुरल प्रैक्टिस हो गई है। कोई भी चीज़ मेरी नहीं है, मेरा कबट और खटिया देखो कुछ नहीं मिलेगा। और अन्दर शरीर से न्यारे, बाबा के प्यारे हैं। तो कौन बाबा का अच्छा बच्चा मेरा ऐसा साथी है वो हाथ उठाओ। विश्व भर में ऐसे बाबा के बच्चे कितने होंगे, गिनती करके देखो। वन्डरफुल है। अच्छा।

–